

# डॉ. रॉबर्ट सी. न्यूमैन, चमत्कार, सत्र 3, चमत्कारों पर विज्ञान और उदारवाद

© 2024 रॉबर्ट न्यूमैन और टेड हिल्डेब्रांट

यह हमारा कोर्स है, चमत्कारी और यीशु के चमत्कार, और जिसे हम यूनिट मॉड्यूल 3 कह सकते हैं, आप इसे जो भी नाम देना चाहें, विज्ञान और उदारवाद का उदय। तो चलिए इस पर एक नज़र डालते हैं। हम पुनर्जागरण से शुरू करते हैं।

तुर्कों द्वारा कॉन्स्टेंटिनोपल के पतन के साथ पश्चिमी यूरोप द्वारा ग्रीक शास्त्रीय लेखकों को फिर से खोजा गया क्योंकि शरणार्थी पश्चिम की ओर भाग गए थे। इस प्रकार यूरोपीय लोगों को पता चला कि ये प्राचीन लेखक वास्तव में क्या सोचते और सिखाते थे, उन्होंने मध्य युग के दौरान आई विकृत जानकारी और अरबी अनुवादों के माध्यम से स्पेन से प्रेषित कम विकृत सामग्री को सही किया। इस सामग्री में दर्शन, विज्ञान, नैतिकता, इतिहास, सरकार, चिकित्सा, बयानबाजी, नाटक और कविता के साथ-साथ बुतपरस्त धर्म और जादू शामिल थे।

इसका नतीजा यूरोपीय विश्वविद्यालयों के लिए एक बड़ी प्रेरणा थी, और प्राचीन ग्रीक और हिब्रू भाषाओं में रुचि बढ़ रही थी। इसने यूरोपीय लोगों को मध्ययुगीन ईसाई धर्म, इस्लाम और यहूदी धर्म की तुलना में अपनी संस्कृति को व्यापक संदर्भ में देखने में मदद की, लेकिन इसने कई प्राचीन पाखंडों को भी फिर से पेश किया। विद्वानों को प्राचीन बुतपरस्ती से चमत्कार के वृत्तांतों की प्रकृति के बारे में पता चला।

इसके अलावा, इस समय के आसपास, हमारे पास सुधार है, जो ईश्वर की कृपा के सुसमाचार की पुनः खोज है, जो साक्षरता के निम्न स्तर, स्थानीय बुतपरस्ती और सांसारिक समाज के साथ समन्वय, और कैथोलिक चर्च और मठवाद की संस्थागत गति के कारण ईश्वर के वचन की सदियों की अज्ञानता से भ्रमित और भ्रमित हो गया था। इसने मध्ययुगीन कैथोलिक धर्म के फिल्टर के माध्यम से बाइबल को कैसे समझा गया था, इसके विपरीत बाइबल वास्तव में क्या सिखाती है, इस बारे में नए सिरे से रुचि पैदा की। इस अध्ययन का एक परिणाम यह अहसास था कि मध्ययुगीन और आधुनिक कैथोलिक चमत्कारों का स्वाद बाइबल से अलग था।

चूंकि कैथोलिक धर्म ने सिखाया कि चमत्कार विशेष रूप से पवित्र लोगों के जीवन के संबंध में जारी रहते हैं, इसलिए चमत्कारों की निरंतरता को अस्वीकार करने की प्रवृत्ति थी। मध्ययुगीन विज्ञान के बारे में थोड़ा सोचें। कुछ मध्ययुगीन विश्वविद्यालयों ने भौतिकी में काफी प्रभावशाली काम किया था, जिससे हमें पता चला कि अरस्तू पृथ्वी पर वस्तुओं की गति के बारे में गलत थे, लेकिन यह कोपरनिकस, गैलीलियो और केपलर का काम था जिसने दिखाया कि अरस्तू का पृथ्वी-केंद्रित ब्रह्मांड विज्ञान गलत था, और आधुनिक विज्ञान के उदय का मार्ग प्रशस्त किया।

निकोलस कोपरनिकस, 1473-1543, प्राचीन दुनिया की खगोलीय अटकलों से अवगत थे, उन्होंने उल्लेख किया कि ग्रहों की स्थिति की गणना करने की तकनीक का एक बड़ा सरलीकरण प्राप्त किया जा सकता है यदि यह मान लिया जाए कि वे पृथ्वी के चारों ओर घूमने के बजाय सूर्य के

चारों ओर घूमते हैं। गैलीलियो, 1564-1642, आकाश को देखने के लिए नव आविष्कृत दूरबीन का उपयोग करने वाले पहले व्यक्ति थे, उन्होंने दिखाया कि न तो सूर्य और न ही चंद्रमा परिपूर्ण थे, जैसा कि अरस्तू ने दावा किया था, और यह कि चंद्रमाओं की एक ग्रह प्रणाली बृहस्पति ग्रह के चारों ओर घूमती है ताकि सब कुछ पृथ्वी के चारों ओर न घूमे। जोहान्स केपलर, 1571-1630, ने अपने गुरु टाइको ब्राहे द्वारा संकलित विशाल अवलोकन डेटा का उपयोग यह दिखाने के लिए किया कि ग्रह वास्तव में सूर्य के चारों ओर घूमते हैं और उनकी गति को कई नियमों द्वारा वर्णित किया जा सकता है।

यह हमें आइज़ैक न्यूटन, 1642-1727 तक ले आता है। इतिहास के सबसे प्रतिभाशाली दिमागों में से एक न्यूटन ने एक नए प्रकार की दूरबीन तैयार की, यह पता लगाया कि एक कांच का प्रिज्म सफेद प्रकाश को उसके विभिन्न रंगीन घटकों में अलग कर देगा, एक नए प्रकार के गणित का आविष्कार किया, और दिखाया कि केपलर के ग्रहों की गति के नियमों को गति के बहुत ही सामान्य नियमों के सेट द्वारा समझाया जा सकता है जो पृथ्वी पर सभी वस्तुओं पर लागू होते हैं, साथ ही गुरुत्वाकर्षण नामक एक बल जो सभी विशाल वस्तुओं को एक दूसरे की ओर आकर्षित करता है। समकालीन कवि अलेक्जेंडर पोप ने न्यूटन, प्रकृति और प्रकृति के नियमों के बारे में लिखा, जो रात में छिपे हुए थे।

भगवान ने कहा, न्यूटन को रहने दो, और सब कुछ प्रकाशमय हो जाएगा। न्यूटन का प्रभाव। न्यूटन खुद एक ईसाई थे, हालांकि आर्यन किस्म के, यानी, जो यीशु के देवता में विश्वास नहीं करते थे।

वह ईश्वर, सृष्टिकर्ता में विश्वास करते थे, जो चमत्कारिक रूप से प्रकृति में हस्तक्षेप कर सकते थे, और उन्होंने अपना काफी समय बाइबिल की भविष्यवाणी पर शोध करने में बिताया। लेकिन उनके बाद आने वाले कई लोगों को लगा कि उन्होंने कानून के संदर्भ में वास्तविकता को इतना समझाया कि ईश्वर की आवश्यकता ही नहीं थी। इससे इंग्लैंड में देववादी आंदोलन और बाद में फ्रांस में फिलॉसॉफी आंदोलन का जन्म हुआ, जिसे महान फ्रांसीसी विश्वकोश के लेखकों ने लोकप्रिय बनाया।

धार्मिक उदारवाद का उदय स्पिनोज़ा, ह्यूम और कांट, इन तीन लोगों ने चमत्कारों को अस्वीकार करने के लिए दार्शनिक औचित्य प्रदान करके धार्मिक उदारवाद का मार्ग प्रशस्त किया। बेनेडिक्ट स्पिनोज़ा, डेविड ह्यूम और इमैनुअल कांट। हम बाद में उनके तर्कों को अधिक विस्तार से देखेंगे।

बेनेडिक्ट स्पिनोज़ा 1632 से 1677 तक जीवित रहे। स्पिनोज़ा ने एक सर्वेश्वरवादी दृष्टिकोण अपनाते हुए तर्क दिया कि प्रकृति और ईश्वर एक ही चीज़ के लिए दो अलग-अलग शब्द हैं, कि प्राकृतिक कानून और ईश्वर के आदेश भी एक ही हैं, कि ईश्वर के आदेश अपरिवर्तनीय हैं, और इसलिए चमत्कार परिभाषा के अनुसार असंभव हैं। डेविड ह्यूम, 1711-1776 ने अनुभवजन्य दृष्टिकोण से चमत्कारों पर हमला किया।

उन्होंने तर्क दिया कि हमारे प्राकृतिक नियम दृढ़ और अपरिवर्तनीय अनुभव पर आधारित हैं और चमत्कार, परिभाषा के अनुसार, प्राकृतिक कानून का उल्लंघन करते हैं। इसलिए, हमें किसी घटना के लिए चमत्कारी स्पष्टीकरण को कभी स्वीकार नहीं करना चाहिए, जब तक कि कोई गैर-चमत्कारी स्पष्टीकरण और भी अधिक असंभव न हो। इमैनुअल कांट, 1724-1804, ने तर्क दिया कि मनुष्य की पहुँच केवल दिखावे तक है, न कि चीज़ों तक जैसी वे वास्तव में हैं, इसलिए सभी धर्मशास्त्र और तत्वमीमांसा अनुचित अटकलें हैं।

केवल व्यावहारिक तर्क को ही ईश्वर, स्वतंत्रता और अमरता के अस्तित्व को स्थापित करने का अधिकार था, जो केवल कर्तव्य के नैतिक धर्म की ओर ले जाता है। इस तरह के धर्म, ईश्वरवाद के एक रूप को चमत्कारों द्वारा प्रमाणित करने की आवश्यकता नहीं है, जो इस प्रकार रोजमर्रा की जिंदगी के लिए अप्रासंगिक हैं, सिवाय शायद आम लोगों को नैतिकता का अभ्यास करने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए जब उन्हें बेहतर उद्देश्यों से ऐसा करने के लिए नहीं लाया जा सकता है। धार्मिक उदारवाद, जैसा कि हम आज इसे कहते हैं, ऊपर उल्लिखित ताकतों के प्रोटेस्टेंट हलकों के भीतर एक परिणाम है।

पहला, कैथोलिक चमत्कारों के बारे में प्रोटेस्टेंटों की घृणा। दूसरा, अनियमित और अंधविश्वासी घटनाओं की रिपोर्ट के लिए वैज्ञानिक तिरस्कार। तीसरा, दार्शनिक भावना कि चमत्कार या तो निगमनात्मक रूप से असंभव हैं, आगमनात्मक रूप से अनुचित हैं, या व्यावहारिक रूप से अप्रासंगिक हैं।

और चौथा, एक ईश्वरवादी विश्वास कि वास्तविक धर्म रहस्योद्घाटन के बजाय नैतिक था। 19वीं सदी के जर्मनी में धार्मिक उदारवाद ब्रिटिश ईश्वरवाद और फ्रांसीसी नास्तिकता के लिए एक अधिक ईसाई विकल्प के रूप में उभरा। इसने ईसाई धर्म के नैतिक चरित्र और बाइबल की बेहतर शिक्षाओं, विशेष रूप से नए नियम और यीशु के जीवन को संरक्षित करने की कोशिश की।

यह उदारवादी दृष्टिकोण से यीशु के जीवन को फिर से लिखने के प्रयासों में देखा जाता है, साथ ही बाइबिल की पुस्तकों को फिर से लिखने, विभिन्न स्रोतों और संपादकों की धारणा बनाने, घटना के बाद भविष्यवाणी लिखने और धर्मग्रंथों में काल्पनिक आख्यानों और झूठे लेखकों को स्वीकार करने के द्वारा पवित्र इतिहास में चमत्कारों से बचने के लिए भी। उदारवाद का प्रसार। उदारवाद 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में डार्विनवाद की काफी मदद से जर्मनी से ब्रिटेन और संयुक्त राज्य अमेरिका में फैल गया।

यह पहले विश्वविद्यालयों, फिर धर्मशास्त्रीय सेमिनारियों और अंततः मुख्य संप्रदायों पर हावी हो गया। यह आज संयुक्त राज्य अमेरिका और यूरोप के अधिकांश बौद्धिक और सांस्कृतिक नेताओं की रूढ़िवादिता है। इसने अधिकांश पुराने मिशन क्षेत्रों में समान हलकों को भी प्रभावित किया है।

उदारवाद का प्रभाव। उदारवाद संयुक्त राज्य अमेरिका में आम लोगों के बीच कभी भी उतना लोकप्रिय नहीं रहा जितना नेतृत्व के बीच। फिर भी, मिश्रण के माध्यम से इसका काफी प्रभाव है, यहाँ तक कि अधिक रूढ़िवादी ईसाई समूहों के बीच भी।

विभिन्न पंथों और नए युग के समूहों ने इसकी कई शिक्षाओं को स्वीकार किया है, और रूढ़िवादी ईसाइयों ने उदारवाद के प्रति कभी-कभी अति प्रतिक्रिया व्यक्त की है। खैर, यह विज्ञान और धार्मिक उदारवाद के उदय का एक त्वरित दौरा है, और आप देख सकते हैं कि चमत्कार की अस्वीकृति का प्रभाव वहाँ है, जो आखिरकार, हमारे यहाँ व्याख्यानों का विषय है, चमत्कार। ठीक है, यह जितना मैंने सोचा था उससे कहीं अधिक तेजी से हुआ, लेकिन यह तीन था।

चार है... वह चीज़ अभी भी काम नहीं कर रही है।